



कीटों से नष्ट हुई फसलें

 drishtiias.com/hindi/printpdf/crops-lost-to-pests

पिरलिम्स के लिये:

रेगिस्तानी टिड्डियाँ, अंतर्राष्ट्रीय पौध संरक्षण सम्मेलन

मेन्स के लिये:

कीट संबंधी समस्या और फसल उत्पादन

चर्चा में क्यों:

एक हालिया रिपोर्ट के अनुसार, दुनिया की 40% कृषि फसल हर वर्ष कीटों द्वारा नष्ट हो जाती है।

संयुक्त राष्ट्र ने वर्ष 2020 को अंतर्राष्ट्रीय पादप स्वास्थ्य वर्ष के रूप में घोषित किया, जिसे 1 जुलाई, 2021 तक बढ़ा दिया गया है।

प्रमुख बिंदु:

संक्रमण का कारण:

- पौधों की सभी बीमारियों में से आधी वैश्विक स्थानांतरण और व्यापार के माध्यम से फैलती हैं, जो पिछले एक दशक में तीन गुना हो गई हैं।
- मौसम दूसरा सबसे महत्वपूर्ण कारक है।

जलवायु परिवर्तन का प्रभाव:

यह कृषि और वानिकी पारिस्थितिकी प्रणालियों में विशेष रूप से ठंडे आर्कटिक, बोरियल, समशीतोष्ण और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में कीटों के फैलने के जोखिम को बढ़ाएगा।

आक्रामक कीटों को नियंत्रित करना:

- आक्रामक कीटों के नियंत्रण में सहायता के लिये असामान्य रूप से गर्मी एवं सर्दी पर्याप्त हो सकती है।
- 'फॉल आर्मीवॉर्म कीट' जो मक्का, ज्वार और बाजरा जैसी फसलों के माध्यम से खाना प्राप्त करते हैं और 'टेफिरिटिड फ्रूट फ्लाईज़' (जो फल और अन्य फसलों को नुकसान पहुँचाते हैं) पहले से ही गर्म जलवायु के कारण फैल चुके हैं।

- जलवायु परिवर्तन के कारण रेगिस्तानी टिड्डियों (दुनिया के सबसे विनाशकारी प्रवासी कीट) के अपने प्रवासी मार्गों और भौगोलिक वितरण को बदलने की उम्मीद है।

पादप कीटों का प्रभाव:

- यह लाखों लोगों को पर्याप्त खाद्यान्न से वंचित कर देता है।
- यह कृषि गतिविधियों पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है और इस प्रकार ग्रामीण गरीब समुदायों के लिये आय का प्राथमिक स्रोत है।
- आक्रामक कीट देशों को वार्षिक रूप से कम-से-कम 70 बिलियन अमेरिकी डॉलर खर्च करते हैं और जैव विविधता के नुकसान के मुख्य चालकों में से एक हैं।

मुख्य सिफारिशें:

- किसानों को नीति निर्माताओं के एकीकृत कीट प्रबंधन जैसे पर्यावरण के अनुकूल तरीकों के उपयोग के लिये प्रोत्साहित करना चाहिये।
- व्यापार को सुरक्षित बनाने के लिये, अंतर्राष्ट्रीय पादप स्वास्थ्य मानकों और मानदंडों को लागू करना महत्वपूर्ण है, जैसे कि अंतर्राष्ट्रीय पौध संरक्षण सम्मेलन (IPPC) और खाद्य एवं कृषि संगठन (FAO) द्वारा विकसित स्वास्थ्य मानक और मानदंड।
 - IPPC भारत सहित 180 से अधिक देशों द्वारा हस्ताक्षरित एक पादप स्वास्थ्य संधि है।
 - इसका उद्देश्य दुनिया के पौध संसाधनों को कीटों के प्रसार और नुकसान से बचाना और सुरक्षित व्यापार को बढ़ावा देना है।
- राष्ट्रीय पादप स्वास्थ्य प्रणालियों और संरचनाओं को मज़बूती प्रदान करने के लिये तथा अधिक शोध के साथ-साथ निवेश की आवश्यकता है।
- नीति निर्माताओं और सरकारों को यह सुनिश्चित करना चाहिये कि उनके निर्णय ठोस तैयारी और डेटा पर आधारित हों।
- नियमित रूप से पौधों की निगरानी करना और उभरते खतरों के बारे में पूर्व चेतावनी प्राप्त करना, सरकारों, कृषि अधिकारियों और किसानों को पौधों को स्वस्थ रखने के लिये निवारक और अनुकूल उपाय करने में मदद करता है।

कीट नियंत्रण के तरीके:

- कीट को नियंत्रित करने के सबसे लोकप्रिय तरीकों में आनुवंशिक रूप से संशोधित (GM) फसलों और कीटनाशकों का उपयोग शामिल है, हालाँकि कुछ आर्मी वॉर्म्स ने इन युक्तियों के लिये प्रतिरोध विकसित किया है और फसलों को नष्ट करना जारी रखे हुए हैं।
- प्राकृतिक दृष्टिकोण, जिसमें 'ततैया' जैसे प्रजनन शिकारियों को आवश्यक होने पर खेतों में छोड़ा जाना शामिल है, साथ ही एक 'जर्म वारफेयर' विकसित करना है जो उन बीमारियों को अलग करता है जिनसे कैटरपिलर (आर्मिवार्म) प्रवण होता है, वैज्ञानिकों द्वारा खोजा जा रहा है।
- एक संगरोध प्रणाली, जिसके तहत ऐसे कीड़ों की मेजबानी करने वाले अनाज और पौधों के आयात का शिपिंग बंदरगाहों, हवाई अड्डों और भूमि सीमा पर निरीक्षण किया जाता है।
- भारत में संगरोध प्रणाली, 2003 के 'प्लांट क्वारंटाइन' (भारत में आयात का विनियमन) आदेश द्वारा शासित है, जिसे वर्ष 1914 के विनाशकारी कीट और कीट अधिनियम के तहत अधिसूचित किया गया है।

भारत में संगरोध जिम्मेदारी संयंत्र संरक्षण, संगरोध और भंडारण निदेशालय (फरीदाबाद, हरियाणा में मुख्यालय) के पास है। कम स्टाफ वाले निदेशालय और एक मज़बूत कानून की कमी ने भारतीय सीमाओं पर पुलिस का काम मुश्किल बना दिया है।

